ISSN 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 10 | November - 2016

Indian Streams Research Journal

दलित जीवन का कडवा यथार्थ : जूठन आत्मकथा के परिप्रेक्ष में

रमेश मनोहर लमाणी
शोध छात्र, हिंदी विभाग , मानस गंगोत्री, मैसूर विश्वविद्यानिलय, मैसूर.

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखक और कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि यह दुनिया छोडकर हम सब से अल्विदा कर गए । वे एक संघर्षशील अम्बेडकरवादी योद्धा लेखक थे । जिन्होंने अपनी लेखनी से ब्राह्मणवादी व्यवस्था पर निरन्तर प्रहार किया । 'वर्ण और जाति' में बँटे अधिसंख्य भारतीय समाज को वे अपने लेखन से समता को राह पर लाने के लिए आजन्म संघर्ष करते रहे । दलित जीवन को दारूण स्थिति परिस्थिति और त्रासदी को उन्होने अपनी लेखनी के माध्यम से सवर्ण समाज की विकृत मानसिकता तथा दोहरे चरित्र को उजागर किया है । उत्तर भारत में दलित साहित्य को प्रतिष्ठित और प्रचारित करने वालों की अम्बेडकरवादी टीम में उनका बडा योगदान था । उनकी आत्मकथा 'जूठन' अंग्रेजी के साथ अन्य भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनूदित हुई । इस आत्मकथा को पश्चिमी उत्तर प्रदेश का समाज शास्त्रीय दस्तावेज कहा जा सकता है । वाल्मीजि ने आत्मकथा लिखकर पूरे समाज को यह बता दिया कि हमारा जीवन जानने के लिए किसी रची हुई कहानी या आरव्यान की नही स्वंय हमारे जीवन को देखना जरूरी है । इस आत्मकथा के माध्यम से साहित्य को समाज का दर्पण होने का विश्वास दिलाया है । वाल्मीकि (चुहडा जाति) समाज का त्रासद जीवन, इस दलित आत्मकथा में पूरी सच्चाई के साथ लिपिबन्द किया गया है । उन्होंने जिस यंत्रण और अपमान को झेलते हुए अपनी जिंदगी का सफर आरंभ किया, उसका यथार्थ चित्रण इस आत्मकथा में अत्थन्त मार्मिक शैली में किया गया है । सवर्ण अध्यापकों की दलित बच्चो के प्रति जो सनातनी घृणा और नफरत है, उसे साहस के साथ वाल्मीकि जी ने अपनी लेखनी से उजागर किया है । ओमप्रकाश जी को हेडमास्टर ने खानदानी काम का जिक्र कराते हुए कहा था – "ठीक है वह जो सामने शीशम का पेड खड़ा है उस पर चढ जा और टहनियों की झाड़ू बना ले। पत्ते वाले झाड़ू बनाना फिर पूरे स्कूल को ऐसा चमका दे जैसे सीसा । तेरा तो यह खानदानी काम है।" "स्कूल में मास्टर जी को प्रश्न पूछने पर मुर्गा बनाना पडता – "घोरा कलियुग आ गया है जो. . . एक अछुत जभान जोरी कर रहा है।" स्कूल का वातावरण इतना भयानक था कि हेडमास्टर सुअर के समान लगते – "हेडमास्टर को देखकर मेरी रूह काँप जाती थी लगता जैसे सामने से मास्टर नहीं कोई जंगली सुअर थूंथनी उठाये चिंचियात चला आ रहा है ।" यह व्यवस्था सवर्णो केलिए स्वर्ग और दलितों के लिए नरक निर्माण करती है ।

'जूठन' आम्तकथा में आर्थिक कष्टों का अत्यंत सजीव चित्रण हुआ है । वाल्मीकि जी की माँ आठ–दस तगाओं के घरों मे मवेशियों को बाँठने की जगह पर साफ सफाई का काम करती थी । माँ के सात भाई, बाबी एंव बहन भी काम करती थी । इसके बदले १२–१३ किलों अनाज, दोपहर की बची कुची रोटी, कभी–कभी भंगन की टोकरी में 'जूठन' भी डाल दिया

जाता । इस अमानवीय व्यवस्था पर आक्रोश प्रकठ करते हुए लेखक ने लिखा है –

अपने श्रम का मूल्य माँगना अपराध क्यों है?" वाल्मीकी जी अपने चाचा के साथ मरे हुए बैल को उठाने, खाल बेचने चले जाते पर मित्रों की दृष्टि से बचने का प्रयास करते थे ।

भारतीय जातिग्रस्त समाज में हर एक को सबसे पहले व्यक्ति की जाति के बारे में जानने की जिज्ञासा रहती है । दलित जानते है सवर्ण उनसे मुँह मोड लेते हैं । ओमप्रकाश वाल्मीकि को 'जूठन' में दलितों को दयनीय स्थिति का चित्रण प्रस्तुत हुआ है। बरला गांव के व्यक्तियों पर त्यागियों से होने वाले अत्याचार का यथार्थ अंकन हुआ है । जूठन में हर आदमी लेखक से पूछते है कि – "तू कूण जात का है । अबे चुहडें के दूर हट बदबू आ रही है ।" चूहडे जाति के कारण कुलकर्णि की बेटी सविता वाल्मीकि के प्रेम से मुंह मोड लेती है । सन १९८० में जब पत्नि सविता वाल्मीकि जी रेल में सफर करते समय एक मंत्रालयके परिवार से परिचय होता है । आत्मीयता भी बढ गयी पर जैसे ही भंगी जात का सुनते ही बिगड जाते है – और डिब्बे में सन्नाटा छा जाता है । ये आत्मकथा वेदना के गर्भ से जन्मी और पुरानी सामाजिक संरचनाओं को अस्वीकार करती है । जूठन आत्मकथा में लेखक ने पूरे समाज व्यवस्था पर तमाचा मारा है । स्वयं जीये हुए परिवेश का यथार्थ अंकन किया है । इस आत्मकथा में निहित संवेदना का पक्ष इतना प्रबल है कि सारी वास्तविकता आइने के समान साफ हो जाती है । ये आत्मकथा दलितों के लिए मात्र सीमित नही है, पिछडे हुई जितनी भी जातियाँ है उनके लिये सोचने पर मजबूर करती है । केवल मजबूर मात्र नही करती लडने का साहस भी देती है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिन्दी के श्रेष्ट साहित्यकार थे, पर उनकी श्रेष्टता को हमारे साहित्यकारों ने सच्चे मन से कभी स्वीकार नहीं किया । उनके लिए वे जीवनभर वाल्मीकि (चूहडे) ही बने रहे, अगर यहाँ के साहित्य पण्डितों ने जाति और वर्ग के चश्मे से देखा । यही कारण है कि उन्हे ज्ञानपीठ तथा साहित्य अकादमी' के पुरस्कार के योग्य नही समझा गया, जबकि सच तो यह है कि आज की साहित्यिक पीढी में वे प्रख्यात हिन्दी सेवी और समतामूलक समाज स्थापित करने के लिए समर्पित बडे व्यक्तित्व थे। ओमप्रकाश वाल्मीकि यदि सवर्ण जातियों में जन्मे होते तो उन्हें वह सब कुछ बहुत जल्दी ही मिल जाता, जो कि दलित होने के कारण उन्हें अब तक नहीं मिला ।

वे अब हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके लिए इस देश का दलित समाज विलख रहा है । ओमप्रकाश जी की लेखकीय सत्कीर्ति है । वे अपनी कृतियों के द्वारा हम सबके बीच सर्देव मौजूद बने रहेंगे । उनका संघर्ष और लेखन सदियों तक हमारे राष्ट्र को प्रकाश देता रहेगा । 'प्रकाश' कभी मर नही सकता । ओमप्रकाश, मृत्यु से परे है । उनकी छतरी सिरहाने है, और, 'जूठन' आँखो के सामने, वे इस दुनिया से ओझल होकर भी अपनी रचाओं में सदैव झिल मिलाते – हाथ हिलाते मिल जायेंगे भारत माँ के इस साहित्य वीर को मेरा सादर प्रणाम ।

आधार ग्रंथ :

१) ओमप्रकाश वाल्मीकि – जूठन
२) अपेक्षा – जुलाही – सितंबर २००३.
३) अम्बेडकर इन इण्डिया – जनवरी – २०१४.
४) चर्चित हिन्दी की दलित आत्मकथाएँ – ललिता कौशल